इस्लाम

—मुकम्मल दीन
मुस्तक़िल तहज़ीब

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पो० बाक्स न० 119, लखनऊ ।

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशन :

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
पोस्ट बाक्स नं० 119, नदवा, लखनऊ
(भारत)

Series No. 219

प्रथम संस्करण
1989

मुद्रक :
नदवा प्रेस, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

मौलाना अबुल हसन अली नदवी का यह रिसाला उर्दू में सन् 1972 ई० में मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियात इस्लाम लखनऊ ने शाया किया था। मुल्क के हालात और मौजूदा जरूरत के पेश नज़र हिन्दी जानने वाले मुसलमान भाई-बहनों के लिए इसे यहाँ हिन्दी में पेश किया जा रहा है। अल्लाह तआला इससे फ़ायदा पहुंचाये। आमीन।

मोहम्मद हसन अंसारी

किला बाज़ार, रायबरेली
11·4· 1405 हिज्री
4·1·1985 ई०

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

पेश लफ्ज

बाख़बर हज़रात जानते है कि हमारे मुल्क में अरसे से बाज़ हल्क़ों की तरफ़ से वहदते अदियान की दावत दी जा रही है। दूसरी तरफ़ सरकारी व सियासी हल्के क़ौमी एक-जहती की तहरीक चला रहे हैं। मुल्क के बहुत से दानिशवर, अख़बारात व रसायल इस की तशरीह ऐसी करते हैं जिससे "मन व तू" का इम्तेयाज़ और मुख़तलिफ़ फ़िरकों के तहज़ीबी ख़सायस बिल्कुल ही ख़त्म हो जायें। हिन्दुस्तान के मुसलमान इस वक्त जिस एहसास कमतरी और शिकस्ता दिली के शिकार हैं उससे अन्देशा मालूम होता है कि वह इस तहरीक का असर लेकर उन हुदूद को भीं पार कर जायेंगे जिनके बाद मुसलमान का मुसलमान रहना भी मुश्किल है।

यह अन्देशा इसलिए भी सही है कि ख़ुद मुसलमानों में बहुत से पढ़े लिखे लोग इस्लाम को सिर्फ चन्द अक़ायद व आमाल व रसूम का मजमुआ समझते हैं। और वह किसी मुस्तकिल तहज़ीब के कायल नहीं। इस बात ने इसका खतरा पैदा कर दिया है कि हिन्दुस्तान में फिर एक नई शक्ल में अकबरी अहद का आग़ाज़ हो। बहुत से नफ़सियाती व सियासी असबाब की बिना पर इस दौर में मुसलमानों के इससे कहीं ज्यादा असर लेने और अपनी इनफिरादियत खो देने का ख़तरा है जितना उस वक्त था।

www.abulhasanalinadwi.org

इसलिए उन सब हज़रात को इस मसअले की तरफ़ ध्यान देने की जरूरत है जो दीन को समझते हैं और जो इस्लाम के साथ इस्लामी तहज़ीब व कल्चर को भी ज़रूरी समझते हैं। इस रिसाले की इशाअत इस सिलसिले की एक हक़ीर कोशिश है। हम कोशिश करेंगे कि इस तरह के और मज़ामीन भी शाया करते रहें।

मोहम्मद राबे नदवी
सेक्रेट्री
मजलिसे तहक़ीकात व नशरियात
इस्लाम, लखनऊ

मई 15,1972 ई०

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला ने इन्सानों की रहनुमाई के लिए और अपनी ज़ात की मारफ़त अता करने के लिए नबियों के गिरोह को मुन्तख़ब फ़रमाया। अपने कलाम और पैग़ाम के ज़रिये पहले उनको, फिर उनके ज़रिये अपनी मख़लूक़ को अपनी ज़ात व सिफ़ात का इल्म अता फ़रमाया और अपने अहकाम और जिन्दग़ी गुज़ारने के पसन्दीदा तरीके से आशना किया। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है:—

तर्जुमा : "अल्लाह का यह तरीक़ा नहीं है कि तुमको ग़ैब पर मुत्तला करदे, ग़ैब की बातें बताने के लिए तो वह अपने रसूलों में जिसको चाहता है मुन्तख़ब कर लेता है।" (सूरः आले इमरान—179)

अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात, उसकी बन्दगी का सही तरीक़ा और जिन्दगी गुज़ारने का पसन्दीदा तरीक़ा मालूम करने का इन पैगम्बरों की तालीमात के अलावा और कोई ज़रिया नहीं। यह अक्ल व ज़ेहानत, क़यास आराई व तबा आज़माई, ख्वाहिशात और कौमी रस्म व रिवाज का मैदान नहीं। इसके लिए इसके सिवा कोई तरीक़ा नहीं कि इस दुनिया का पैदा करने वाला ख़ुद इसकी ख़बर दे और वह इसकी ख़बर पैगम्बरों ही के ज़रिये देता है। इसलिए इस इल्म व

www.abulhasanalinadwi.org

हिदायत का ज़रिया सिर्फ नबियों का गिरोह है क़यामत तक के इन्सानों की हिदायत, ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीका इसी गिरोह के साथ जुड़ा है। इन्हीं के बताये हुए अक़ायद, इन्हीं की अता की हुई अल्लाह की मारफ़त इन्हीं की तरीक़-ए-ज़िन्दगी, इन्हीं की माशरत व इख़लाक अल्लाह तआला को महबूब व मक़बूल हैं। और सारे इन्सानों को उनकी तक़लीद और इक़तदा करने और उनको अपने लिए नमूना बनाने की हिदायत और ताकीद है। कुरआन मजीद का फ़रमान है :–

तर्जुमा : "यह थी हमारी वह हुज्जत जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में अता की। हम जिसे चहते हैं बलन्द मर्तबा अता करते हैं, हक़ यह है कि तुम्हारा रब निहायत दाना और अलीम है। फिर हमने इब्राहीम को इस्हाक़ को और याक़ूब अ० जैसी औलाद दी, और हर एक को राहे रास्त दिखाई (वही राहे रास्त जो) इससे पहले नूह अ० को दिखाई थी। और उसी की नस्ल से हमने दाऊद, सुलेमान, अय्यूब, यूसुफ, मूसा और हारून अ० को हिदायत बख़्शी। इस तरह हम नेककारों को उनकी नेकी का बदला देते हैं। (उसी की औलाद से) ज़करिया, यहया, ईसा और इलियास अ० को (राहयाब किया) हर एक उनमें से सालेह था। (इसी के खानदान से) इस्माईल, अलयसअ और यूनुस और लूत अ० को (रास्ता दिखाया) उनमें से हर एक को

www.abulhasanalinadwi.org

हमने तमाम दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत अता की और उनके आबा व अजदाद और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में से बहुतों को हमने नवाज़ा, उन्हें अपनी ख़िदमत के लिए चुन लिया, और सीधे रास्ते की तरफ उनकी रहनुमाई की, यह अल्लाह की हिदायत है, जिसके साथ वह अपने बन्दों में से जिसकी चाहता है, रहनुमाई करता है, लेकिन अगर कहीं उन लोगों ने शिर्क किया होता, तो उनका सब किया कराया ग़ारत ही जाता वह लोग थे जिनको हमने किताब और हुक्म और नबूवत अता की थी, अब अगर यह लोग इसको मानने से इन्कार करते हैं, तो (परवाह नहीं) हमने कुछ और लोगों को यह नेमत सौंप दी है जो इससे मुनकिर नहीं हैं। ऐ मोहम्मद! वही लोग अल्लाह की तरफ से हिदायत याफ्ता थे, उन्हीं के रास्ते पर तुम चलो, और कह दो कि मैं (इस तबलीग़ व हिदायत के) क़ाम पर तुमसे किसी अज्र (बदला) का तालिब नहीं हूं। यह तो एक आम नसीहत है तमाम दुनिया वालो के लिए''

[सूरः अन आम 83–91]

यह अल्लाह तआला के बन्दों का वह महबूब गिरोह है जिसकी हर बात अल्लाह तआला को महबूब है। अक़ायद व इलाहियात से लेकर मरग़ूबात, इख़लाक़ व माशरत और तहज़ीब उनकी हरचीज महबूब है। उन्हीं के अक़ायद, इख़लाक

www.abulhasanalinadwi.org

व तहजीब व माशरत के मजमूआ को "इस्लाम" और उस निजामे ज़िन्दगी को जो उसके मुतवाज़ी है "जाहिलियत" से ताबीर किया जाता है।

नबियों के गिरोह में अल्लाह तआला ने सय्यदना इब्राहीम अ० को अपनी महबूबियत और नस्ल इन्सानी की इमामत से सरफ़राज फ़रमाया और उन्हीं की औलाद में नबियों के सिलसिले को जारी किया। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इरशाद है:-

तर्जुमा : "और अल्लाह तआला ने इब्राहीम को अपना ख़ालिस दोस्त बना लिया" (सूरः निसा-125)

तर्जुमा : "(अल्लाह तआला ने) फ़रमाया कि मैं तुमको लोगों का पेशवा बनाऊँगा" [सूरः बक़रः 124]

तर्जुमा : " बेशक इब्राहीम ही थे, राह डालने वाले हुक्म बरदार अल्लाह के, एकसू, और मुशरिको में से न थे, हक़ मानने वाले उसके एहसानों के, अल्लाह ने उनको मुन्तख़ब कर लिया, और चलाया सीधी राह पर, और हमने उनके दुनिया में भी ख़ूबी दी थी और वह आखिरत में भी अच्छे लोगों में होंगे, फिर हमने तुम्हारी तरफ 'वही' भेजी कि दीन इब्राहीमी की पैरवी करो जो बिल्कुल एकसू थे और मुशरिकों में से न थे।

[सूरः नहल 120-123]

इब्राहीम अ० के बाद से उन्हीं की इमामत का दौर और पेशवाई है। और इब्राहीमी दौर क़यामत तक क़ायम रहेगा।

www.abulhasanalinadwi.org

इसी दौर के आख़िरी पैगम्बर मोहम्मद स० और इस दौर की आख़िरी उम्मत "मुसलमान" हैं। मुसलमानों को खेताब कर के क़ुरआन मजीद में साफ कहा गया है :–

तर्जुमा : "उसने तुमको पसन्द किया, और नहीं रखी तुम पर दीन में कुछ मुश्किल। दीन है तुम्हारे बाप इब्राहीम का, उन्होंने तुम्हारा नाम रखा "मुसलमान" (हुक्मबरदार)" (सूरः हज 78)

इब्राहीमी इमामत और दावत की खुसूसियत तौहीदे ख़ालिस और शिर्क से नफ़रत और बेज़ारी है क़ुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम अ० के वह अल्फाज़ नक़ल किये गये हैं जो उन्होंने अपने जमाने के मुशरिकीन से कहे:–

तर्जुमा : "हम तुम से और जिनको तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उनसे बेज़ार हैं, हम तुम्हारे मुनकिर हैं और हममें तुम में हमेशा के लिए अदावत और बुग्ज़ ज़ाहिर हो गया, जब तक तुम एक अल्लाह पर ईमान न लाओ" (सूरःमुमतहिना4)

अपने और अपनी औलाद के लिए उनकी दुआ इन अल्फ़ाज़ में मनक़ूल है:–

तर्जुमा : "मुझे और मेरी औलाद को इस से दूर ही रख कि हम कभी बुतपस्ती में शामिल हो जायें"

(सूरः इब्राहीम35)

इब्राहीमी दौर के सबसे बड़े और आख़िरी पैगम्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जिनको अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम ही की नस्ल में अरब की सरज़मीन और

www.abulhasanalinadwi.org

मक्का के उस शहर में पैदा फ़रमाया जहाँ उनके जद्द अमजद हज़रत इब्राहीम अ० ने ख़ुदा का घर (काबा) इसलिए तामीर किया था, कि वह क़यामत तक के लिए तौहीद और हिदायत का मरक़ज बने। हज़रत इब्राहीम अ० ने जिस सिलसिले को शुरू किया था अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी तकमील फ़रमाई और उसे दुनिया के कोने कोने तक पहुंचा दिया। आप पर नबूवत का सिलसिला ख़त्म और आपके ज़रिये इनामे इलाही की तकमील हो गई। और अब दुनिया में हिदायत और आख़िरत में कामयाबी का दारो-मदार आप ही की पैरवी पर है। आप की वफात से क़रीब तीन महीने पहले अरफ़ा के दिन अरफ़ात के मैदान में क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत नाज़िल हुई:-

तर्जुमा : "आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी, और इस्लाम को तुम्हारे लिए बहैसियत दीन के पसन्द कर चुका" (सूरः मायदा-3)

अब आप के लाये हुए दीन और अक़ीदा को क़ुबूल करने, आपकी पसन्द की हुई तहज़ीब व माशरत और आपके इख़लाक हमीदा को अपनाने से सिर्फ अल्लाह की मुहब्बत ही नहीं बल्कि वह मक़ाम हासिल हो सकता है जिससे ऊँचा कोई मक़ाम नहीं। फ़रमाया गया:-

तर्जुमा : "ऐ मोहम्मद (स०) उनसे कह दीजिये अगर तुमको अल्लाह के साथ मुहब्बत है तो मेरी चाल चलो अल्लाह तुमको महबूब बना लेगा और तुम

www.abulhasanalinadwi.org

को बख्शा बख्शाया बना देगा।"

(सूरः आलेइमरान 31)

इस्लामी शरीअत और इब्राहीमी तहज़ीब

अब दुनिया में जहाँ तक हिदायत और अल्लाह तआला की रज़ा और क़ुबूलियत का तअल्लुक है, सय्यदना इब्राहीम अ० और मोहम्मद स० का ही दौरे इमामत है। उन्हीं के बताये हुए अक़ायद भी मोतबर हैं। अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात और उसकी वहदानियत का जो अक़ीदा उन्होंने बताया वही सही अक़ीदा है। इख़लाक़ और माशरत के जिन तरीकों को उन्होंने अपनाया वही ख़ुदा के नजदीक सही और पसन्दीदा हैं। जिस चीज की उन्होंने पाबन्दी की और जिसकी तरफ़ उनकी फ़ितरत हमेशा के लिए मायल हो गई उसी को ख़ुदा ने आखिरी दीन का शेआर और हिदायतयाफ़ता इन्सानों की तहज़ीब क़रार दिया। इसी को हदीस की जबान में "ख़सायले फितरत" और शरीअत की इस्तलाह में "सुन्नत" कहा जाता है। इन्सान के दोनों हाथ अल्लाह के बनाये हुए हैं, लेकिन दाहिने हाथ को बायें हाथ पर क्यों फ़ज़ीलत है? और अच्छे कामों में उसके इस्तेमाल करने की क्यों हिदायत है? इसलिए कि यह नबियों की आदत है। और इब्राहीमी व मोहम्मदी तहज़ीब की पहचान है।

यह तो मैंने समझने के लिए एक छोटी सी मिसाल दी। इब्राहीमी तहज़ीब अपनी एक अलग शख़्सियत रखती है। इसका मेज़ाज, उसकी पसन्द व ना पसन्द दूसरी तहज़ीबों से

www.abulhasanalinadwi.org

अलग और जानी पहचानी है। इस पर बड़ी बड़ी किताबें लिखी गई हैं। यहाँ इसकी दो नुमायाँ खुसुसियतों को बयान करता हूं जो हर जगह देखी जा सकती हैं और आसानी से समझ में आ सकती हैं।

साफ़ सुथरा रहना, नहाना धोना, उजले और साफ़ कपड़े पहनना दुनिया की तमाम तहज़ीबों और शाइस्ता इन्सानों में पाया जाता है। इस्लामी इब्राहीमी तहज़ीब में भी इसको बड़ी अहमियत हासिल है, इसको एक लफ्ज़ "नज़ाफ़त" से अदा किया जा सकता है। लेकिन 'नज़ाफ़त' और "तहारत" में फ़र्क़ है। और जहाँ तक मुझे मालूम है 'तहारत' इब्राहीमी तहज़ीब की खुसूसियत है और वह इस बारे में जितनी सेन्सेटिव है और इसका मेआर इसके बारे में जितना बुलन्द हैं, मेरे इल्म में किसी और तहज़ीब में इसकी मिसाल नही मिलती। बदन और कपड़े की पाकी कपड़े या बदन पर पेशाब की एक छींट पड़जाये या कोई गन्दी चीज़ लगजाये तो इसको पाक किये बिना मुसलमान न नमाज़ पढ़ सकता है और न उसको इतमीनान हासिल हो सकता है। चाहे उसके कपड़े दूध की तरह सफेद और उसका बदन आइना की तरह साफ़ हो। यही हुक्म पानी, खाने, बर्तन, फर्श, ज़मीन और उन सब चीज़ों का है जो मुसलमान के इस्तेमाल में आती हैं।

जानवरों के गोश्त के इस्तेमाल के बारे में भी इसकी शरीअत और क़ानून दूसरों से मुखतलिफ़ हैं। यहाँ भी मुरदार व जायज़ और हराम व हलाल का फर्क़ है। इस्लामी शरीअत में कई जानवर हराम हैं और आमतौर पर यह वही हैं जिनको

www.abulhasanalinadwi.org

इन्सान की सही फ़ितरत ना पसन्द करती है। और जो हलाल और जायज़ हैं उनको भी ज़िबह करने और ज़िबह करते वक्त अल्लाह का नाम लेने की शर्त है।

लाज़वाल इमामत और आलमगीर दावत

अल्लाह तआला ने इब्राहीम अ० के लिए लाज़वाल इमामत और लाफ़ानी दावत का फैसला फ़रमाया है। उसने उनकी नस्ल में नबूवत, विलायत और दीनी रहनुमाई का मँसब हमेशा के लिए रख दिया है। उनके पूरे ख़ानदान पर बल्कि उनके हर मेहमान पर हक़ के लिए जिहाद, बातिल का मुक़ाबला, ख़ुदा की तरफ़ दावत और हर तरह के मुख़ालिफ़ हालात में इन्सानियत के बेड़े को पार लगाने की ज़िम्मेदारी है उनका फ़र्ज है कि हक़ के इस चराग़ को किसी हाल में भी बुझने न दें। यह वह बुनियादी बात है जो इन्सानियत की भलाई, बरबादी से उसकी हिफाज़त और जहन्नम से नजात के लिए काम कर रही है। इस लिए आज हमारी दावत वही होनी चाहिए जो अपने ज़माने में हज़रत इब्राहीम अ० ने दी थी। और जिस को अल्लाह ने हमेशा के लिए सनद दी है।

तर्जुमा : "और यही बात (इब्राहीम) अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गये, शायद वह ध्यान देते रहें"

(सूरः ज़ुख़रफ़ 28)

यह दावत बुत परस्ती और शिर्क के खिलाफ़ है:–

तर्जुमा : "बस बचते रहो बुतों की गन्दगी से और बचते रहो झूठी बात से, सिर्फ एक ख़ुदा के होकर

www.abulhasanalinadwi.org

और उसके साथ शराक न ठहरा कर''
(सूरः हज 30-31)

इस दावत का अक़ीदा हमेशा यह रहा है :–

तर्जुमा : ''यह आलमे आख़िरत हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास करते हैं, जो दुनिया में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फ़साद करना, और नेक नतीजा मुत्तक़ी लोगों को मिलता है''।

(सूरः क़सस 83)

यह वह दावत है जो इन्सान और इन्सान में और वतन और वतन में कोई फ़र्क़ नहीं करती और रंग व नस्ल और ज़बान के मामलें में कोई जानिबदारी नहीं बरतती और न किसी तरह के एग्रेसन की इजाज़त देती है। इसके नज़दीक रंग, नस्ल, ज़बान और कल्चर की बुनियाद पर किसी इन्सान का किसी इन्सान से नफ़रत करना, उसकी जान या इज्ज़त के पीछे पड़ना, उस पर ज़ुल्म करना बुत परस्ती की ही एक क़िस्म और जाहिलियत की यादगार है:–

तर्जुमा : ''जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की और ज़िद भी जाहिलियत की''।

(सूरः फतह 26)

अल्लाह के रसूल स० ने फ़रमाया :–

तर्जुमा : ''मेरे बाद बिल्कुल क़ाफिर ही न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन बेधड़क मारने लगो''।

उसके नज़दीक सारे इन्सान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बने हैं। किसी अरबी को अजमी पर, किसी

www.abulhasanalinadwi.org

अजमी को अरबी पर कोई फ़ौक़ियत नहीं, मगर सिर्फ़ तक़वा की बुनियाद पर :–

तर्जुमा : "लोगों हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हारी क़ौम और क़बीले बनाये ताकि एक दूसरे की पहचान करो, और ख़ुदा के नज़दीक तुम में ज्यादा इज्ज़त वाला वह है जो ज्यादा परहेज़गार है"।

(सूरः हुजरात-13)

आख़री नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि, "जिसने किसी असबियत की दावत दी वह हम में से नहीं, जो असबियत के लिए लड़ा वह हम में से नहीं जो असबियत पर मरा वह हम से नहीं"। आपने एक मौके पर जब बाज़ लोग अन्सार और मुहाजिरीन के नाम पर नारा लगाने लगे थे, यह फ़रमाया, "इसको छोड़ो यह बड़ी गन्दी बात है"।

इब्राहीमी दावत की असल बुनियाद अक़ीदा में तौहीद पर, सोसाइटी में इन्सानियत के एहतराम और मसावात पर इख़लाक़ियात के मैदान में तकवा, हया और तवाजो पर, अमल के मैदान में आख़िरत के लिए कोशिश और जिहाद व क़ुरबानी पर, जँग के मैदान में शुजाअत के साथ रहम दिली और शफ़क़त पर, हुकूमत के दायरे में हिदायत के पहलू को मालियात व आमदनी पर तरजीह देने और ख़िदमत लेने के बजाय ख़िदमत करने, और नफ़ा उठाने के बजाय नफ़ा पहुंचाने पर है।

www.abulhasanalinadwi.org

यह दावत इन्सानियत की सन्जीदा और सच्ची ख़िदमत और जाहिलियत के हमलों से इन्सानियत की हिफ़ाज़त में पूरी तारीख़ में मुमताज़ है।

कसरत में वहदत:—मिट्टी की निस्बत के एतबार से जिसकी एक असल और हक़ीकत है, जिसकी हमारे दिल में क़दर व मुहब्बत है, और इस्लाम भी इससे इनकार नहीं करता और इसे ख़त्म करने का हुक्म नहीं देता, मिट्टी की इन निस्बतों के एतबार से जिनकी असल 'मिनहा ख़लक़नाकुम' है, हम वर्मी हैं, हम हिन्दुस्तानी हैं, हम तुर्क हैं, और इसी एतबार से हम सय्यद हैं, मुग़ल हैं, पठान हैं, लेकिन ईमानी और इख़लाकी हैसियत से, दिमाग़ी और जेहनी हैसियत से हम इब्राहीमी हैं, हम मोहम्मदी हैं, और हम मुस्लिम हैं।

हमको अपनी इब्राहीमी व मोहम्मदी सिफत का साफ़ साफ़ इज़हार करना चाहिए। इसका सबूत देना चाहिए कि हम ज़ेहनी, ईमानी और रूहानी एतबार से, और इन निस्बतों की हैसियत से जो ज्यादा कीमती हैं सिर्फ इब्राहीमी हैं सिर्फ मोहम्मदी हैं सिर्फ मुसलमान हैं, चाहे हम हिन्दुस्तान में रहते हों चाहे पाकिस्तान में, चाहे इन्डोनेशिया में, चाहे चीन के रहने वाले हों चाहे मराकश के। तमाम दुनिया से निराले और अनोखे एक नये क़िस्म के खानदान के हम फर्द हैं। अपनी क़ौमियत और अपनी जबान की हैसियत से हम कितने ही मुख़तलिफ़ क्यों न हों हम सब एक हैं। मराकश के मुसलमान, मलाया के मुसलमान, बर्मा के मुसलमान, हिन्दुस्तान के मुसलमान, अलजज़ायर के मुसलमान सब की एक तहज़ीब है।

www.abulhasanalinadwi.org

हो सकता है कि हमारे पहनावे मुख़्तलिफ़ हों, मसलन हिन्दुस्तान में शेरवानी पहनी जाती है, लेकिन दूसरों मुल्कों के मुसलमान हरगिज़ इसके पाबन्द नहीं कि वह शेरवानी पहनें। इस्लाम ने लेबास की तराश ख़राश और उसकी काट एक तरह की नहीं दी। नबियों ने भी यह हुक्म नहीं दिया कि एक ही तरह के लेबास पहनो। हम देखते हैं कि अगर दुनिया भर के मुसलमानों को किसी जगह जमा करके देखा जाये तो उनका पहनावा अलग-अलग किस्म का होगा यह इख़्तलाफ़ तहज़ीब का इख़्तलाफ नहीं कहलायेगा।

इब्राहीमी तहज़ीब दर असल उन हुदूद का नाम है जिन्हें नबियों ने मुक़र्रर किया। और इसी वजह से वह दुनिया के इस सिरे से उस सिरे तक मुशतरक हो सकती है। इन हुदूद के अन्दर आज़ादी है, जिन्दगी गुजारने के लिए बड़ा मैदान है। एक सही फ़ितरत का इन्सान बड़ी आसानी से इसमें जिन्दगी गुजार सकता है लेकिन हुदूद का पाबन्द रहना पड़ेगा। मर्द रेशम न पहनें, बेपर्दगी और बेजाखर्च न हों, पाजामा या लूंगी टख़नों से नीचे न हो। घटनों से ऊपर न हो, बेहयाई न हो, फ़ज़ूल खर्ची न हो।

हुदूद के इश्तराक के एतबार से अगर हम तहजीब की वहदत देखना चाहते हैं तो इसकी एक बहुत साफ मिसाल यह है कि बर्मा, मलाया, इन्डोनेशिया के मुसलमान दाहिने हाथ से खाते हैं, हिन्दुस्तान के मुसलमान भी दाहिने हाथ से खाते हैं और सारी दुनिया का मुसलमान हर अच्छा काम दाहिने हाथ से करता हैं, बाये हाथ से सिर्फ वही काम करता है जिनका

www.abulhasanalinadwi.org

तक़ाजा ज़रूरत या फितरत करती है। यह चीज़ उन हुदूद में से है जिन्हें नबियों ने मुक़र्रर किया है। इब्राहीमी व मोहम्मदी तहज़ीब में हर चीज़ के कुछ हुदूद हैं। अज़दवाजी जिन्दगी के कुछ ज़ाब्ते हैं, सोसाइटी के बारे में कुछ हिदायतें हैं। इसके बाद हमारा जो जी चाहें खायें, जिस तरह चाहें पकायें, कोई मुखालिफ़त नहीं करेगा। अल्लाह ने साफ मना कर दिया है कि कोई किसी के पहनावे पर मज़ाक न उड़ाये, किसी के खाने पीने और रहन सहन के तरीके का मज़ाक न उड़ाये, कोई किसी की ज़बान का मज़ाक न उड़ाये :–

तर्जुमा : "कोई क़ौम किसी क़ौम की खिल्ली न उड़ाये, मुमकिन है कि वह लोग इन से बेहतर हों। और न औरतें औरतों का मज़ाक उड़ायें, मुमकिन है कि वह उनसे अच्छी हों। और अपने मोमिन भाई को ऐब न लगाओं और न एक दूसरे का बुरा नाम रखो"।

(सूर : हुजरात–11)

वतन की मोहब्बत और इब्राहीमी तहज़ीब में दुराव नही

हमको मुल्क की तामीर व तरक्की में हिस्सा लेना चाहिए और एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर तामीरी सलाहियत का सबूत देना चाहिए। हमको अपनी क़ाबिलियत, ईमानदारी, इन्तेज़ामी लियाक़त, सदाक़त, इस्तेक़ामत और सीरत की बुलन्दी और पुख्तगी का सबूत देना चाहिए। हम इस तरह मुल्क की ख़िदमत करें कि हमारी क़ीमत महसूस की जाये और हमारे वजूद को

www.abulhasanalinadwi.org

इस मुल्क के लिए ज़रुरी समझा जाये।

हमको अपने मुल्क की ज़बानों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए। हम न सिर्फ़ यहाँ की ज़बानें पढ़ें बल्कि उसमें महारत हासिल करें यहां तक कि हमारी ज़बान सनद मान लीजाये, हम इसके माहिर माने जायें। हम ज़बानें जो चाहें अपनायें, मगर इब्राहीमी तहज़ीब हम पर यह पाबन्दी आयद करती है कि झुठ न बोलें। हमारी लिखावट दायें तरफ से शुरु है या बायें तरफ़ से। बायें तरफ से लिखने पर इस्लामी शरीअत में कोई एतराज़ नहीं लेकिन यह पाबन्दी ज़रुर है कि हमारी तहरीर सच्चाई और नेक नियती पर मबनी हो। इसमें झूठ, फ़रेब, ज़ुल्म व ना इन्साफी न हो, बेहायी की बात न हो। झूठ, फरेब, गुनाह और हर वह चीज़ जिस से इन्सान पर ज़ुल्म होता हो, इन्सानियत ज़लील होती हो, दुनिया में बद अमनी फैलती हो, अरबी या फारसी रसमुल ख़त में लिखी जायेगी, वह ग़लत होगी, ख़ुदा की नाफ़रमानी होगी। इसके बरख़िलाफ़ हक़ व इन्साफ़ की बात अंग्रेज़ी या देवनागरी में लिखी जायेगी जो बायें तरफ से शुरु होती है, वह पसन्दीदा होगी, सवाब की और ख़ुदा की ख़ुशनूदी की बात होगी।

अरबी बेशक इस्लामी शरीअत की सरकारी ज़बान है इसमें क़ुरआन मजीद नाज़िल हुआ है, इसी में नमाज़ पढ़ी जाती है। इसके बाद सब ज़बानें बराबर हैं।

यह दूसरी बात है कि दायें तरफ़ से शुरू होने वाली ज़बानों में इस्लाम की तालीमात का एक बड़ा ज़ख़ीरा है। इसलिए कि दायें से लिखी जाने वाली सामी या आरियन

www.abulhasanalinadwi.org

ज़बानों में ऐसी नस्लें पैदा हुईं जिनको तारीख़ में इसका तवील मौक़ा मिला कि वह इस्लाम की ख़िदमत कर सकें। उन्होंने इस ज़बान के ज़रिये इस्लाम को समझाया इस्लामी तालीमात को मुन्तक़िल किया। इस लिए हमारी निगाह में इन ज़बानों की किसी हद तक अहमियत है इसी बिना पर हम हिन्दुस्तान के अन्दर उर्दू की हिफ़ाज़त करना और अपनी आइन्दा नस्लों को इससे आशना करना अपना फ़र्ज़ समझते हैं। लेकिन इस से ज़बानों की पोज़ीशन पर कोई असर नहीं पड़ता और इससे किसी ज़बान की पाबन्दी नहीं आयद होती। यह ज़रूर है कि इस्लामी तहज़ीब यह पाबन्दी आयद करती है कि हम चाहे दायें से लिखें या बायें से इस में कोई झूठी दस्तावेज़ न हो, इसमें किसी की ग़ीबत न हो, बददियानती न हो। यह है इब्राहीमी तहज़ीब का ख़ुसूसी किरदार।

हिन्दुस्तान के इस मुल्क में जहाँ सैकड़ों तहज़ीबें, मज़ाहिब और फ़लसफ़े फले फूले और अब भी मौजूद हैं मुसलमान इब्राहीमी तहज़ीब के नुमाइन्दे और अलमबरदार हैं। इनके यहाँ रहने का मक़सद इसी दीन व तहज़ीब की हिफ़ाज़त होनी चाहिए और इसी में इस मिल्लत की हिफ़ाज़त और नुसरत का राज़ पोशीदा है।

हिन्दुस्तान में, जिसके ग़ालिब मज़हब और तहज़ीब ने बीसियों मज़ाहिब और तहज़ीब को अपने अन्दर समो लिया और इस तरह तहलील कर दिया कि उनका इम्तेयाज़ और उनकी इनफ़रादियत मिट गई, इस्लामी तहज़ीब के इतनी लम्बी मुद्दत तक बाक़ी रहने का राज़ यही है कि इसने इब्राहीमी तहज़ीब व

www.abulhasanalinadwi.org

ख़सायल से अपना रिश्ता क़ायम रखा और अपने ख़ास अक़ीदे से हटना गवारा नहीं किया। अब भी इसकी हिफ़ाज़त इसी तरह मुमकिन है कि वह अपने मरकज़ से अपना रिश्ता क़ायम रखे और अपनी लाइन आफ डिमारकेशन (सरहदी ख़त) को मिटने न दे।

इब्राहीमी मिल्लत किसी का इजारा नहीं

मिस्र, अरब, मक्का के क़ुरेशी, यमन के ज़ैदी, मराकश के हसनी, जावा और सुमात्रा के हज़री का जितना इब्राहीमी मिल्लत पर हक़ है, उतना ही हक़ हिन्दुस्तान के मुसलमान, पाकिस्तान के मुसलमान, मलाया के मुसलमान और अफ़ग़ानिस्तान के पठान का भी है। यह हक़ कोई नहीं छीन सकता। एक हाशिमी क़ुरेशी के मुक़ाबले में जिसने अपनी बदक़िस्मती से हज़रत इब्राहीम और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से अपना रिश्ता काट दिया हो, वह ब्रह्मनज़ादा हज़ारहा दर्जे अफ़ज़ल है जिसने अपना रूहानी, ईमानी, इख़लाक़ी, अक़ली और तहज़ीबी रिश्ता हज़रत इब्राहीम और मोहम्मद रसूलुल्लाह स० से क़ायम कर लिया :—

'क्या ख़ूब कहा सनूसी ने एक रोज़ शरीफ़े मक्का से तू नाम व नसब का हिजाज़ी है, पर दिल का हिजाज़ी बन न सका'

अगर एक हिन्दुस्तानी का दिल हिजाज़ी है, तो उस हाशिमी से हज़ार दर्जे अच्छा है जो अपने ख़ानदान और नसब पर या जाहिलियत पर फ़ख्र करता है जो अबूजहल और

www.abulhasanalinadwi.org

अबूलहब की औलाद होने पर फ़ख्र करता है और इब्राहीमी मिल्लत की तहज़ीब और ख़ुसूसियात से उनको कोई दिलचस्पी नहीं है।

फ़ानी रिश्ते : दुनिया के सब रिश्ते फ़ानी हैं। न हाशिमी रहेगा न अरबी, न हिन्दुस्तानी रहेगा न मलायन, न इन्डोनेशी रहेगा न जावी। बस अल्लाह का नाम बाक़ी रहेगा और अल्लाह के लिए ख़ुलूस बाक़ी रहेगा। नाम व नसब के भेदभाव और ख़ानदानों की कमतरी और बरतरी सब फ़ानी और हेच हैं। अल्लाहतआला को दीन अज़ीज़ है, इख़लास अज़ीज़ है, इब्राहीमियत अज़ीज़ है और इसके बाक़ी रहने का अल्लाह ने फ़ैसला किया है :–

"जो करेगा इम्तेयाज़े रँग व ख़ूँ मिट जायेगा,
तुर्क ख़रगाही हो, या एराबी-ए-वाला गुहर"

हमारे दो फ़ैसले : हम मुसलमानों ने पूरे इरादे के साथ सोच समझ कर अपने वतन में रहने का फ़ैसला किया है। हमारे इस फैसले को अल्लाह के इरादे के सिवा कोई ताक़त बदल नहीं सकती। हमारा यह फ़ैसला किसी कम हिम्मती, मजबूरी या बेचारगी की बिना पर नहीं। हमने सोच समझ कर यह फैसला किया है।

हमारा दूसरा फैसला यह है कि हम इस मुल्क में अपने पूरे अक़ायद, दीनी शेआर और अपनी पूरी मज़हबी और तहज़ीबी ख़ुसूसियात के साथ रहेंगे। हम इनके किसी एक नुक्ते से भी दस्तबरदार होने के लिए तैयार नहीं।

इस देश के वासी की हैसियत से हमें यहां आज़ादी और

www.abulhasanalinadwi.org

इज्ज़त के साथ रहने का पूरा हक़ हासिल है। यह इस देश की जमहूरियत और आईन का भी फैसला है। लेकिन इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि हम अपनी खुसूसियात, अपने अक़ायद, शेआर, अपनी जबान व तहज़ीब और अपनी इन चीज़ों को छोड़ कर जो हम को अज़ीज़ है, इस मुल्क में रहें। इस लिए कि इस तरह रहने से यह वतन वतन नहीं बल्कि एक जेलख़ाना बन जाता है जिसमें गोया पूरी क़ौम को ज़िन्दगी की इज्ज़तों और लज्ज़तों से महरूम रखकर सज़ा दी जाती है। हमारा ख़मीर ज़रूर इस मुल्क की ख़ाक से तैयार हुआ है और यह ख़ाक हमको बहुत प्यारी है लेकिन हमारी तहज़ीब इब्राहीमी है। और मुसलमान जिस मुल्क में भी रहेगा उसकी वतनियत चाहे कुछ भी हो उसकी तहज़ीब इब्राहीमी होगी। हम यहाँ ज़िन्दा और बाइज्ज़त इन्सानों की तरह रहना चाहते हैं। हम इस मुल्क में आज़ाद हैं। इसकी तामीर व तरक्की में शरीक और इसकी दस्तूरसाज़ी में दख़ल रखते हैं। इसलिए इस का कोई सवाल नहीं कि हम दूसरे दर्जे के शहरियों की तरह ज़िन्दगी बसर करें। अपने मुल्क में आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारना हर शख्स का फितरी, इन्सानी, इख़लाकी और क़ानूनी हक़ है, और इस हक़ को जब छीनने की कोशिश की गई तो इसके हमेशा सँगीन नतामज़ निकले।

ज़िन्दगी और मौत इस्लाम पर

अल्लाह तआला ने मुसलमानों से इस बात का मतालबा किया है कि वह इस्लाम व ईमान पर क़ायम रहने की कोशिश

www.abulhasanalinadwi.org

करें, इसी पर ज़िन्दगी गुज़ारें और जब मौत आये तो इसी दीन व मिल्लत पर आये। अल्लाह तआला का इरशाद है :–

तर्जुमा : तुमको मौत न आये मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो''। (सूर : आले इमरान–102)

तर्जुमा : ''इसी तरीके पर चलने की हिदायत इब्राहीम ने अपनी औलाद को की थी, और इसी की वसीयत याक़ूब ने अपनी औलाद को की। उन्होंने कहा था कि ''मेरे बच्चो ! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन पसन्द किया है, लेहाज़ा मरते दम तक मुस्लिम ही रहना''।

(सूर : बक़ : 132)

इस्लामी शरीअत ने एक मुसलमान के लिए पैदाइश से लेकर मौत तक इस के इन्तेज़ामात किये हैं और ऐसा माहौल बनाने की कोशिश की है जिस में मुसलमान इस हक़ीक़त को फ़रामोश न करने पाये। उसको हर वक्त याद रहे कि उसका तअल्लुक़ उस दीन व मिल्लत से है जिसकी दावत देने वाले इब्राहीम अ० थे जिसकी बुनियाद तौहीद पर है और वह एक अलग ''उम्मत'' हैं मुसलमान बच्चा जिस वक्त पैदा होता है, उसके कान में अज़ान दी जाती है, उसका इस्लामी नाम रखा जाता है, नामों में उन नामों की तरजीह दी गई है जिनमें अबदियत व हम्द का इज़हार है उससे इब्राहीमी सुन्नतें अदा करायी जातीं हैं और जब वह मरता है, तो सब इसके लिए मग़फ़रत की दुआ करते हुए अपने लिए और सब मुसलमानों के लिए दुआ करते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

तर्जुमा : ऐ अल्लाह ! हम में से तू जिसको ज़िन्दा रखे उसको इस्लाम पर ज़िन्दा रखियो और जिस को तू मौत दे तो उसको ईमान के साथ दुनिया से उठाइयो" ।

यहाँ तक कि क़ब्र में उतारते हुए और आख़िरी ठिकाने पर पहुँचाते हुए भी यही लफ्ज ज़बान पर होते हैं ।

तर्जुमा : "अल्लाह के नाम पर और रसूलुल्लाह के दीन व मिल्लत पर" ।

इस सब का मक़सद और पैग़ाम यह है कि हमें उठते बैठते, सोते जागते और ज़िन्दगी की हर मँज़िल पर इसको याद रखना है कि हम इब्राहीमी मिल्लत और मोहम्मद स० की उम्मत के फ़र्द हैं ।

इब्राहीमी मिल्लत और दीन मोहम्मदी की इस दावत को आज सराहत के साथ पेश करने की ज़रूरत है सोसाइटी व इख़लाक में इस दावत के कुछ ख़ास उसूल हैं इसका एक ख़ास अक़ीदा और किरदार है । यह मिल्लत फ़र्द की भलाई की ज़ामिन है ।

नाज़ुक अमानत : आज मुसलमानों की ईमानी क़ूवत का भी इम्तेहान है और जेहानत का भी, फैसले की ताक़त का भी इम्तेहान है और ज़िन्दगी की सलाहियतों का भी । हमको साबित करना है कि हम ईमान के साथ ज़िन्दा रहने के क़ाबिल हैं या नहीं । हम जहाँ रहें इस देश की ख़ुसूसियात अपने अन्दर ख़ुशी से पैदा करें, वहाँ की ज़बाने सीखें, और बच्चों को पढ़ायें, अपने हिस्से की रसद हासिल करें, देश के एडमिनिस्ट्रेशन में

www.abulhasanalinadwi.org

हिस्सा लें लेकिन साथ ही साथ दावत देने वाले भी रहें, मोमिन भी रहें, तौहीद का एलान भी करें और पैग़ाम पहुँचाने वाले भी बनें। ख़ुदा के यहाँ हम से सवाल होगा कि अल्लाह ने हम को सैकड़ों साल इस मुल्क में बाक़ी रखा लेकिन हज़रत इब्राहीम और मोहम्मद रसूलुल्लाह की दावत, और आपका दीन क्यों हमारे अन्दर महदूद रहा, इस को फैलना चाहिए।

मूसा अ० की क़ौम की नक़ल से बचिये

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में मूसा अ० की क़ौम बनी इस्राईल का एक इबरतनाक वाक़या बयान किया है जिसमें हमारे लिए बहुत बड़ा सबक़ है :–

तर्जुमा : "बनी इस्राईल को हमने समन्दर से गुज़ार दिया, फिर वह चले और रास्ते में एक ऐसी क़ौम पर उनका गुज़र हुआ जो अपने चन्द बुतों पर आशिक थी, कहने लगे 'ऐ मूसा ! हमारे लिए भी, कोई ऐसा माबूद बना दे जैसे इन लोगों के माबूद हैं।' मूसा अ० ने कहा, " तुम लोग बड़ी नादानी की बातें करते हो, यह लोग जिस तरीके पर चल रहे हैं वह तो बरबाद होने वाला है, और जो अमल वह कर रहे हैं वह सरासर बातिल है"। फिर मूसा अ० ने कहा, "क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे लिए तलाश करूँ' हालाँकि वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें दुनिया भर की क़ौमों पर फ़ज़ीलत दी है।"

(सूर : एराफ 138–140)

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह तआला ने मूसा अ० के ज़रिये बनी इस्राईल को अपनी सही मारफ़त अता की और तौहीद वह दौलत दी जिस से बड़ी कोई दौलत नहीं। उनके अन्दर ईमान पैदा किया। वह यह समझे कि इस दुनिया में अल्लाह के सिवा कोई बन्दगी के लायक़ नहीं और उसके सिवा इस दुनिया में किसी की हुकूमत नहीं। लेकिन वह ऐसे नाक़दरदान और नादान थे कि उन्हों ने एक बार एक मेला देखा कि जिसमें लोग ख़ुदा के सिवा दूसरों को पूज रहे थे। इसे देखकर उनके मुंह में पानी भर आया कि अगर हमारे लिए भी ऐसे ही माबूद तजवीज़ कर दिये जाते तो कैसी रौनक़ और बहार होती। उन्हों ने कहा :-

तर्जुमा : ऐ मूसा ! हमारे लिए भी कोई ऐसा माबूद बना दे जैसे इन लोगों के लिए माबूद हैं"।

(सूर : एराफ़ 138)

ऐ मूसा ! ज़रा हमारे लिए ऐसे ही कोई ज़ाहिरी शक्ल में माबूद तजवीज़ कर दीजिये, जैसा कि उन के पास है। हज़रत मूसा अ० ने कहा, "तुम पहले दर्जे के नादान हो, तुम्हारी अक़्ल पर पत्थर पड़ गया है, तुम्हें नजर नहीं आता। जो यह कह रहे हैं, वह ख़ाक में मिल जानें वाला है, वह कुछ काम आने वाला नहीं। इस के बाद उन्हों ने ज़रा समझा कर कहा :-

तर्जुमा : "क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे लिए तलाश करूँ ? हालाँकि वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हें दुनिया भर की क़ौमों पर फ़ज़ीलत बख्शी है"। (सूर : एराफ 140)

www.abulhasanalinadwi.org

अल्लाह के बन्दों ! ख़ुदा तुम्हारे हाल पर रहम करे ख़ुदा तुम्हे अक़ल और समझ दे। मैं ख़ुदा को छोड़कर तुम्हारे लिए और कोई ख़ुदा लाऊँ। हालाँकि उसने तुम को तमाम दुनिया पर फ़ज़ीलत दी है, और तुम कहते हो कि इस फ़ज़ीलत देने वाले, एहसान करने वाले को छोड़कर जिसने फ़िरऔन की ग़ुलामी से तुमको नजात दी मैं कोई आजिज़ और बेइख्तेयार ख़दा तुम्हारे सामने लाऊँ।

हक़ के लिए सीना सिपर : इब्राहीमी ख़ानदान की एक ख़ूसूसियत यह है कि जहाँ भी रहेगा हक़ के लिए सीना सिपर रहेगा, तौहीद की सदा बुलन्द करता रहेगा। अल्लाह के रास्ते की तरफ सब को बुलाता रहेगा। जिसने अल्लाह के नाम का झँडा बुलन्द किया दुनिया के किसी कोने में अगर आप उसका पता लगायेंगे तो सय्यदना इब्राहीम अ० और सय्यदना मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका रिश्ता मिलता होगा। दुनिया में बार-बार लड़ाईयाँ हुईं, दो आलमगीर जँगें हो चुकी हैं इन से दुनिया में बड़ी तबाही आयी लेकिन इसमें से कोई इब्राहीमी ख़ानदान की जँग नहीं थी। इस ज़ँग में इब्राहीमी ख़ानदान की कोई शाख़ फ़रीक़ नहीं थी। यह पेट के लिए थी, यह बाजारों के लिए थी, मारकेट हासिल करने के लिए थी, हुकूमत और इक्तेदार के लिए थी, यह हवा व हविस की ज़ँग थी, इस लिए कि यह इब्राहीमी मिल्लत की तरफ से नहीं लड़ी गई थी।

आज सारी दुनिया में जिसको देखेंगे कि वह अल्लाह के नाम की रट लगता है, ख़ुद भी लेता है दूसरों को भी तलक़ीन

www.abulhasanalinadwi.org

करता है, अगर तहक़ीक करेंगे तो वह इब्राहीमी व मोहम्मदी निकलेगा। क़यामत तक के लिए तौहीद का एलान ईमान की दावत, ख़ुदा के ख़ौफ़ और आख़िरत की फ़िक्र की दावत, क़यामत तक के लिए दीनी कोशिश को अल्लाह तआला ने इब्राहीमी ख़ानदान के सिर्पुद कर दिया है। हर जगह, हर ज़माने में इब्राहीमी ख़ानदान का कोई सर फिरा मल्लाह मौजों से टकराता रहेगा, धारे के ख़िलाफ़ किश्ती को चलाता रहेगा। बाज़ू थक जाते हैं, पतवार जवाब दे जाते हैं, मौजें गुस्ताख़ी करती हैं मगर इब्राहीमी ख़ानदान का मल्लाह है कि :—

हवा है गो तुन्द व तेज़ लेकिन चिराग़ अपना जला रहा है,
वह मर्द दरवेश जिसको हक़ ने दिये हैं अन्दाजे खुस्र वाना

———

www.abulhasanalinadwi.org

सभ्यता और संस्कृति पर इस्लाम की छाप और उसकी देन

लेखक

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

"इस्लाम और मानव सभ्यता व संस्कृति" एक सच्चा और सजीव विषय है जिसका सम्बन्ध हज़रत मोहम्मद स० के अभ्युदय व इस्लामी सन्देश व शिक्षा ही से नहीं, जीवन की वास्तविकताओं, मानवता के वर्तमान व भविष्य तथा सभ्यता व सस्कृति की संरचना में इस्लामी उम्मत की ऐतिहासिक भूमिका से भी है। यह महत्वपूर्ण प्रकरण वास्तव में एक व्यक्ति के प्रयास के बजाय किसी सामूहिक प्रयास की अपेक्षा करता है। क्योंकि यह विषय अपनी व्यापकता में विश्वव्यापी है। यह व्यापक भी है ठोस भी। इसका काल पहली इस्लामी शताब्दी से लेकर वर्तमान शताब्दी तक, और इसका विस्तार दुनिया के एक किनारे से दूसरे किनारे तक है। अपने भावार्थ में यह विश्वास व आस्था से आचरण व व्यवहार तक तथा व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन से राजनीति व क़ानून और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तक तथा चिन्तन, ज्ञानमयी व नैतिक उत्थान से लेकर कला कौशल तथा ललितकलाओं तक छाया है।

प्रयास किया गया है कि इस फैले हुए शीर्षक का दस भागों में वर्णन किया जाय जिससे दुनिया को इस्लाम के महान् और प्रदर्शित आभार व प्रभाव का कुछ अनुभव हो सके। **(P. 120)**

*

तूफ़ान से साहिल तक लेखक : **मोहम्मद असद**

यह किताब एक 'सफ़रनामा' है, एक बेचैन बुद्धिमान और विचारवान् पश्चिमी विद्वान के पूरब दिशा के सफ़र व मशरिक़ें उस्ता (अरब देशों) की यात्रा की कहानी। 'सफ़रनामा' अपनी नाना प्रकार की रूचियों, तरह-तरह की तसवीरों, रंग बिरगें दृश्यों, बिना हिचकिचाहट चित्रकारी, बेधड़क विचारों का स्पष्टीकरण और ज़िन्दगी व ज़िन्दादिली के साथ जो एक अच्छे और सफल "सफ़रनामा" की विशेषतायें हैं। **(P. 216)**

www.abulhasanalinadwi.org